


---

# AkrandamAnagirayA shivastutiH

——  
आङ्गमानगिरया शिवस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : AkrandanashivastutiH 11

File name : AkrandanashivastutiH.itx

Category : shiva

Location : doc\_shiva

Author : shivakaula

Transliterated by : Sanjay Chakravarty sanjaychak02 at gmail.com

Proofread by : Sanjay Chakravarty sanjaychak02 at gmail.com

Latest update : August 28, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 28, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



આક્રન્દમાનગિરયા શિવસ્તુતિઃ



પણિડત શિવ કૌલ કૃતા

(રોતી હુઈ વાણી મેં ભક્તિ-ભાવ સે ભગવાન શિવ કી આરાધના)

આર્ત ભક્ત અપને ચંચલ ચિત્ત (મન) કો કહતા હૈ-

રે ચિત્ત! ભીત! ચપલ! વિપુલાં વિહાય  
ચિન્તાં, સમાશ્રય પદદ્વયમાર્તબન્ધોઃ ।  
આક્રન્દમાનગિરયા પરયા ચ ભક્ત્યા  
જન્માદિદુઃખશમનમભિપ્રાર્થયસ્વ ॥ ૧ ॥

અર્થ- સંસાર ભય સે પીડિત ઔર ચંચલ બને હુએ હે મેરે  
મન! તુમ સારી ચિન્તા (સંસાર-બન્ધન મેં ડાલને વાલી વાસનાઓં) છોડ  
દો । આર્ત ભક્તોં કે (એકમાત્ર) બન્ધુ (ભગવાન્ શિવ) કે ચરણદ્વય  
કી શરણ લો । પરમ ભક્તિ ઔર રોતી હુઈ વાણી મેં (ઉસસે) જન્મ-મરણ  
આદિ દુઃખ શાન્ત કરને કે લિએ પ્રાર્થના કરો ।

[જન્મ-મરણ, શોક-મોહ ઔર ક્ષુત્-પિપાસા - ચે જીવભાવ કી છ-  
ભિમિયાં (ધર્મ) હૈં । શિવ ઇન ભિમિયાં સે રહિત હૈ ॥ ]

કિં ત્વં મુધા । કથય સંસરણાખ્યઘોરાં-  
ગારેષુ કાતરતયાડભિપચન્ સ્થિતોડસિ ?  
દૈન્યં વિહાય ભવદુઃખવિમુક્તયે ત્વં  
આરાધનાં કુરુ શિવસ્ય, તથાડત્ર વક્ષ્યે ॥ ૨ ॥

અર્થ- જરા કહો, ક્યોં તુમ વ્યર્થ હી સંસાર-ચક્ર નામ કે જલતે  
અંગારોં મેં ડરપોક બનકર સન્તમ હુએ ઠહરે હો ? ઇસ દીનતા  
(અસહાય-ભાવ) કો છોડકર સંસાર દુઃખ સે મુક્ત હોને કે લિએ  
ભગવાન શિવ કી આરાધના મેં લગ જાઓ । (આરાધના કિસ પ્રકાર કરોગે-)  
વહ મૈં યહાં કહ દેતા હૂં । (આરાધના ઇસ પ્રકાર) ॥

डा किं न पश्यसि दृढैरपि पाशजालै-  
 मीं उन्तुमिच्छति पशुमिव कालव्याधः ।  
 कालान्तकारक! मछेश्वर! क्वासि, क्वासि ?  
 भीतं न पालयसि किं ? जगतां निवासिन् ॥ ३ ॥

अर्थ- मडाकाल का अन्त करने वाले भगवान शिव! डाय, डया नलीं  
 देभते डो डि मडाकाल अपने दृढपाश-जाल लेकर मुझे जैसे डी  
 मार डालने की छंछा करता है जैसे अक शिकारी वन्य पशु डो  
 (मारने डे लिअे पीछे डौडता है)? डे मछेश्वर! तुम कडॉ डो,  
 कडॉ डो! डे तीनों जगत् में वास करने वाले (परमेश्वर)! (एस)  
 भय से पीडित मुज (अपने भक्त) की रक्षा ड्यों नलीं करते डो ? ॥

आः किं न उद्धरसि नाथ निमज्जमानं  
 मोडार्णविडतिगडने भवभारक्षिण्णम् ?  
 मा पश्य मत्सुकृतिमप्यतिगर्डितां य  
 वीक्षस्य स्वां मडदनुग्रडशक्तिमेव ॥ ४ ॥

अर्थ- डे स्वामी! डाय, संसार-भार से परेशान (और) बहुत  
 गडरे मोड समुद्र में डूबते डुअे मुज (जैसे भक्त) का उद्धार ड्यों  
 नलीं करते डो ? बहुत निन्दा डे योग्य भी मेरे कुकृत्यों की ओर मत  
 देभो । अपनी मडान अनुग्रड शक्ति की ओर डी (तो) ध्यान डो ॥

कष्टं करालदशनो ड्यपि कालव्यालो  
 दष्टुं मडत्तरजवेन प्रधावति माम् ।  
 नष्टुं डिमस्य तव शक्तिरपोडितैव  
 येनातुरं डि उरगाय ड्युपेक्षसे माम् ॥ ५ ॥

अर्थ- डाय कष्ट है, विकराल दंत निकालकर कालरूपी साँप  
 मुझे डसने डो तेजु से डौडः रडा है । एसका नाश करने डे लिअे आपकी  
 शक्ति मानो छिप गड (मन्द पडःी) है । जान पडता है डि साँप (डो  
 सुरक्षित रभने) डे लिअे मेरी ओर ध्यान नलीं देते (ड्योंकि साँप  
 आपडे अंगों से लिपटे रहने डे कारण आपडो ड्यारे हैं न) ॥

दगधुं कुकर्मापवनेन य दीप्यमानः  
 कालानलोडयमभितो ड्ययिरात्प्रयाति ।  
 भस्मीकरोत्यडड मां जटिति पिनाडिन् !

शान्तिं नयस्व सुकृपाभृतवर्षणेन ॥ ६ ॥

अर्थ- मेरे कुकर्म रूप वायु से जाज्वल्यमान यह मडाकाल रूप अग्नि (मेरे) यारों तरफ़ तेज से झैल रही है । डाय, डाय! यह मुझे शीघ्र ही भस्म कर डालेगी । हे पिनाकधारी शिव! अपने सत्कृपारूपी वर्षण से इस (कालरूप अग्नि) को शान्त कर दो ॥

रुग्णः लुठाम्यवनि भग्नाकटीव सर्पः

कंदर्पद्वर्षणर! मे डरसि न दुःखम् ।

को वा परः त्वदपरः वरणाड्भूडि

यं त्वां विडाय कृपणः शरणां गमिष्ये ॥ ७ ॥

अर्थ- हे कामदेव के दर्प को डरवा करने वाले शिव! मैं टूटी हुई कमर वाले साँप की तरह रोग-ग्रस्त होकर पृथ्वी पर लुड्डूकते जा रहा हूँ आप मेरा दुःख दूर नहीं करते । आप ही बताइये कि आप से उल्टुष्ट और कौन है जो बेरोक (अनर्गल) अनुग्रह करने में समर्थ है जिसकी शरण में, आपको छोडकर, मेरे जैसा कृपण जा सकता है ।

[कृपण (कश्मीरी में डिपित्र) उसे कडते हैं जो उस अक्षर परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने के बिना ही शरीर त्याग करता है- 'यो वा अतदक्षरमविदित्वाऽस्मात्त्वोकात् प्रैति स कृपणः' ऋषि याज्ञवल्क्य बृहदारण्यकोपनिषद् में गार्गी के प्रति अैसा कडते हैं ॥ ]

आर्तोऽस्म्यडं डि विलपामि त्वदऽघ्निलग्नः ।

त्वं तु सुविस्मृतिप्रदौषधियानमग्नः ।

अेतत् यरित्रमुभयोरवलोकमानाः

त्वां शीघ्रतोषित! कथं जगति स्तुवन्ति ॥ ८ ॥

अर्थ- मैं तो आर्त हूँ और आपके चरणों की शरण लेकर विलाप कर रहा हूँ, परन्तु आप लुवा देने वाली औषधि को पीते मग्न (दिमाग़ देते) हैं (जो मेरे इस आर्तनाद की ओर कोठ ध्यान नहीं देते हैं) हे शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले शिव! (उम दोनों का) यह यरित्र देभते हुअे (लोग) कैसे आपकी स्तुति करते ही हैं ॥

शकनोऽसि त्वं यदि न संसृतिदुःखमेतत्

हर्तुं समर्थयसि नार्थिनमुक्तश्च ।  
 नार्थामि चेत् तव कृपालवलेशमीश  
 शीघ्रं बलिष्कुरु तथापि प्रपंचकोशात् ॥ ८ ॥

अर्थ- हे ईश्वर! यदि आप मेरा यह संसार में आवागमन का  
 दुःख दूर नहीं कर सकते और यदि (मुझ) प्रार्थना करने वाले  
 (आर्त भक्त) को उत्तर देने में भी समर्थ नहीं हो, (इस प्रकार)  
 यदि मैं आपकी कृपा का लेश-मात्र भी प्राप्त करने के योग्य नहीं  
 हूँ, तो फिर जल्दी ही मुझे इस संसार रूप कोश (कोठरी) से बाहर  
 कर दो (व्यंग्य में कडा है कि मुक्ति का भाजन बनाओ) ॥

याये न वैश्रवणकोशसमाधिदारं  
 नो वाऽमरेन्द्रसमतां न ददिवि विदारम् ।  
 भोगेच्छयापि भगवन्! न य सार्वभौमं  
 यच्छिन्तया तव मनः ननु भेदमायात् ॥ १० ॥

अर्थ- हे भगवान्! मैं दुबेर के समान धनपति बनने का  
 अधिकार आपसे नहीं माँगता हूँ न राजा इन्द्र के साथ समता और न  
 स्वर्ग-लोक में रहने की माँग करता हूँ । मैं भोगों की इच्छा  
 से भी सबसे बढकर नहीं बनना चाहता हूँ, जिन (माँगों) की  
 चिन्ता से आपके मन में भेद (कष्ट) हो! ॥

दीनोऽस्मि कर्मगतिना सरणौ निक्षिप्तः  
 जन्मजरामरणव्याधिशतैश्चतप्तः ।  
 त्वामर्थयामि गिरिजावर! अतदेव  
 मामुद्धराशु कृपया ननु कोऽत्र भेदः ॥ ११ ॥

अर्थ- मैं अपनी कर्म-गति से दीन-हीन होकर इस संसारचक्र  
 में पडा हूँ जिसके इलस्वरूप मैं जन्म-जरा-मरण और सैकड़ों  
 व्याधियों से संतप्त हूँ । हे गिरिजावर! (पार्वती पति) मैं (इस  
 अवस्था में) आपसे केवल यही माँगता हूँ कि कृपा करके मेरा  
 (इस दुःखमय संसार से) जल्दी उद्धार करो । इसमें (आपको) भेद  
 ही क्या है ॥

त्वं येन उद्धरसि मां हरसि न तापं  
 पापस्य स्वस्य कृलमेव तु तद्विजाने ।

કિંચ જનાસ્તવગુણાનુસ્મૃણો વદેરન્  
 નૈવાર્તત્રાણકુશલો જટિલો કપાલી । ૧૨ ॥

અર્થ- યદિ આપ મેરા ઉદ્ધાર નહીં કરતે ઔર (ઇસ તરહ) મેરે  
 સંતાપ કો દૂર નહીં કરતે તો મૈં યહ જાનતા હી હૂં કિ યહ મેરે  
 અપને પાપ કા ફલ હૈ! કિન્તુ આપકે ભક્તજન આપકે ગુણોં કા અનુસ્મૃન  
 (ચર્યા) કરતે સમય કહેંગે હી કિ યહ જટાધારી શિવ જો હાથ મેં  
 કપાલ લેકર સ્વયં ભિક્ષા કે લિએ ધૂમતા રહતા હૈ, આર્ત ભક્તોં કી  
 (અનુગ્રહ દ્વારા) રક્ષા કરને મેં કુશલ નહીં હૈ ॥

ચચ્ચ ત્વયા ત્રિપુરધાનવધ્વંસકાલે  
 યચ્ચાન્તકાન્તકરણે દહને સ્મરસ્ય ।  
 દિવ્યં બલમતુલમીશ! પ્રદર્શિતં તત્  
 દીનસ્ય ત્રાણકરણાવસરે ક્વ યાતમ્ ॥ ૧૩ ॥

અર્થ- હે ઈશ્વર! જો દિવ્ય (અલૌકિક) ઔર અતુલ (જિસકી કોઈ બરાબરી  
 ન હો એસા) બલ આપકે (ક) ત્રિપુરધાનવ કા નાશ કરતે સમય દિખાયા  
 (ખ) મહાકાલ કા ભી અન્ત કરને કે સમય દિખાયા, ઔર (ગ) કામદેવ કો  
 દગ્ધ કરને કે અવસર પર દિખાયા, વહ (અનુપમ બલ) મુઝ શરણ  
 મેં આયે હુએ ભક્ત કે સમય કહાં ચલા ગયા? (અર્થાત્ સર્વસમર્થ  
 હોકર મેરે સમય ક્યોં અસમર્થ જૈસે અપને આપકો બતા રહે હો?) ॥

ત્વં નિર્બલોસ્થપ્યથવા બલવત્તરોડસિ  
 કર્તુ કૃપાં ત્વમક્ષમોસ્થથવા ક્ષમોડસિ ।  
 સ્વામિન્ ! મમાસિ ભવદ્ઠદ્વિયુગં કથચ્ચિત્  
 પ્રામોડસ્મિ નાથ! શરણં ન તુ તં વિમુચ્ચે ॥ ૧૪ ॥

અર્થ- આપ નિર્બલ હો અથવા આપ બહુત બલવાન હો, આપ કૃપા  
 (અનુગ્રહ) કરને મેં અસમર્થ હો અથવા આપ (કિસી-કિસી પર) કૃપા  
 કરને મેં સમર્થ હો (- ઇન બાતોં સે મેરા કોઈ અભિપ્રાય નહીં હૈ ।  
 પરન્તુ) હે સ્વામી! આપ મેરે હો । હે નાથ! મૈને તો આપકે ચરણોં કી  
 જોડ્ી કી શરણ (કિસી પૂર્વ પુણ્ય-પુજા કે પરિપાક સે ઔર સત્ગુરુ  
 કે કૃપા કટાક્ષ સે) લી હૈ । મૈં તો અબ ઉસ (શરણ અર્થાત્  
 'પકડ') કો નહીં છોડ્ુંગા ॥

સ્વામિન્ ! વિનાપિ વિનયેન યદિ ત્વદગ્રે

तीक्ष्णैः पटैः प्रकटयामि य स्वाभिसंधिम् ।  
 लज्जोञ्जितत्वमपि तत् भगवन्! क्षमोऽसि  
 सोढुं भवान् पितृस्वित्वात्तदुर्वृथांसि ॥ १५ ॥

अर्थ- हे स्वामी! यहि आपडे सामने बडी तेज वाणी में मैं अविनय से  
 डी (आपडे साथ) अपना मेल (सत्तासामान्य भाव से अकता) प्रकट करता  
 हूँ और वड भी लज्जा (शिष्टाचरण) को त्याग कर, तो भगवन्! वड  
 आप डी सडन करने में समर्थ हो जैसे (लोकव्यवहार में) पिता डी  
 अपने बालक डे (अविनय से) कडे दुर्वचनों को सडन कर सकता है ॥

आङ्गनस्तुतिरिथं शिवसन्निधाने  
 भक्त्या तु दीनमनसा पठति पुमान् यः ।  
 तस्य नगेन्द्रतनुजापतिराशुतोषः  
 दुर्वारं दुःप्रशमनं दयया करोति ॥ १६ ॥

अर्थ- इस स्तुति का हल यड है कि जो भी साधारण पुरुष इस  
 आङ्गनस्तुति को बड्ी भक्ति और विनम्र भाव से भगवान् शिव डे  
 सन्निधान पूजा-स्तुति डे रूप में पढता है उस पर पार्वती-पति  
 आशुतोष भगवान् शिव अपनी (अडैतुडी) दया से (कठारे संसार भय  
 से पैदा हुआ) दुःप्र शान्त करते हैं अर्थात् शिव उस भक्त को मुक्ति  
 का भाजन बनाते हैं ।

एति पण्डित शिवकौल कृता आङ्गनस्तुतिः समाप्ता ।

टिप्पणियाँ -

पूजा-स्तुति में भगवान् का चिन्तन (ध्यान) करना आवश्यक  
 है । पूजादि कर्म सहल होते हैं । मदर्षि पतञ्जलि ने कडा  
 है- 'तज्जपस्तदर्थभावना' - भगवान् डे नाम (ॐ) का जप  
 उस (मन्त्र) डे अर्थ को जानते हुअे करने से सिद्धि मिलती है ॥


रचनाकार डे बारे में -


यड सुन्दर तथा भावपूर्ण शिवस्तुति पितामह पण्डित शिवकौल डी  
 कृति है । भगवान् लक्ष्मण जू ने इसे 'अलौकिक स्तुति'  
 कड कर सराडा है । पं. शिवकौल वैकुण्ठवास पयास वर्ष  
 से कुछ कम आयु में, जून १९२२ ई. में हुआ था । इस तरड उनका  
 जन्म १८७२ ई. डे आप-पास हुआ होगा । उनडे गुरु मडाराज डरिद्वार

पातञ्जलाश्रम के स्वामी तेजनाथ थे । अपने गृहस्थ का यथायोग्य  
निर्वाह करते हुए उन्हें मूर्तिकला तथा चित्रकला में भी रुचि थी ।  
योगयर्था, सत्संग तथा वेदान्त श्रवण की ओर अधिक आकृष्ट थे ।  
श्रीनगर के प्रसिद्ध विद्वद्ग्रंथ पं. सुनकाक राजदान से वेदान्त  
शास्त्रों का अध्ययन किया था । इन बातों का मुझे युवा होने पर -  
अपनी दादी जो स्वर्गीया अमरावती से पता चला था । शिवस्तुति और  
माण्डूक्योपनिषद् गौडपाद कारिकाओं का कश्मीरी भाषा में पद्यानुवाद,  
इनकी पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं ।

Encoded and proofread by Sanjay Chakravarty sanjaychak02 at gmail.com

---

——  
*AkrandamAnagirayA shivastutiH*  
pdf was typeset on August 28, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

